Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

कथाकार शिवानी के कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाएँ एक अध्ययन

[1]कृष्ण कुमार, [2]डॉ. संध्या बिसेन
[1,2]हिन्दी विभाग
[1,2]आई.एस.बी.एम.विश्वविद्यालय नवापारा (कोसमी),छुरा,जिला-गरियाबंद(छ.ग.)

सारांश

हिंदी कथा साहित्य में रचनाकारों ने मानवीय भावनाओं को अत्यंत सहज, सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है, उनमें कथाकार शिवानी का स्थान विशिष्ट है। उनके साहित्य में पहाड़ी जीवन, पारिवारिक संबंध, स्त्री मन की जटिलताएँ और सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्रण मिलता है। शिवानी का कथा साहित्य मानवीय संवेदनाओं का एक दस्तावेज़ है, जो पाठक के मन को गहराई तक प्रभावित करता है। मानवीय संवेदनाएँ किसी भी साहित्य की आत्मा होती हैं। इनके बिना साहित्य केवल शब्दों का संयोजन बनकर रह जाता है। शिवानी ने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से प्रेम, करुणा, पीड़ा, त्याग, सहानुभूति और आत्मीयता जैसी मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत स्वाभाविक रूप में अभिव्यक्त किया है। शिवानी ने मायापुरी, कृष्णकली, कालिन्दी, पूतोंवाली, तपण और लाल हवेली जैसी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ को भावपूर्ण शिल्प से चित्रित किया, जो हिंदी कथासाहित्य को लोकप्रिय एवं संवेदनशील बनाता है। शिवानी का साहित्य मानवीय संवेदनाओं का कोष है, जो परंपरा आधुनिकता का संतुलन साधता है। नारी को पूजनीय एवं स्वावलंबी बनाकर उन्होंने हिंदी कथा को समृद्ध किया। आज नारी सशक्तिकरण एवं सांस्कृतिक संघर्ष के दौर में उनकी रचनाएँ प्रासंगिक है, यह अध्ययन पुष्टि करता है कि शिवानी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है, जिनकी संवेदनाएँ कालजयी है। कथाकार शिवानी के कथा साहित्य नारी हृदय की कोमलता, त्याग, करुणा और प्रतिशोध का अनुपम दर्पण है।

मूलशब्द

मानवीय संवेदना, ममता, करुणा, कथा साहित्य, संवेदनशील दृष्टि, सार्वभौमिक करुणा ।

प्रस्तावना

कथाकार शिवानी हिंदी साहित्य की एक ऐसी लेखिका हैं जिनके कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाएँ नारी हृदय की गहराइयों से उभरती हैं, जो सामाजिक यथार्थ को भावपूर्णता से चित्रित करती हैं। उनका साहित्य त्याग, मातृत्व, करुणा, प्रतिशोध और प्रेम जैसे आयामों का अनुपम संगम है, जो पाठक को अंतर्मन की सैर करवाता है। 20वीं सदी के मध्य हिंदी कहानी में नारी विमर्श प्रमुख हुआ, किंतु शिवानी ने नारी को पीड़ित मात्र न बनाकर सशक्त संवेदना का केंद्र बनाया। उनका साहित्य मध्यमवर्गीय जीवन, कुमाऊँनी संस्कृति और विभाजन जैसी ऐतिहासिक घटनाओं से ओतप्रोत है। कृष्णकली, मायापुरी, लाल हवेली जैसी रचनाएँ संवेदना को कथानक का मूल आधार बनाती है, जो हिंदी साहित्य को समृद्ध करती हैं। शिवानी का जन्म साहित्यिक परिवार में हुआ, जिसने उनकी संवेदनशीलता को पोषित किया। मात्र 12 वर्ष की आयु से

लेखन प्रारंभ कर उन्होंने 40 से अधिक उपन्यास, सैकड़ों कहानियाँ रचीं।[1] उनकी रचनाओं में भाषा की कोमलता, भावुक संवाद और यथार्थवादी चित्रण प्रमुख है। मानवीय संवेदनाएँ उनके यहाँ सामाजिक कुरीतियों, विधवा विवाह, दहेज, वेश्यावृत्ति के विरुद्ध करुणा का हथियार बनती हैं। उदाहरणस्वरूप लाल हवेली में विभाजन की त्रासदी नारी द्वंद्व के रूप में उभरती है, जो संवेदना को सार्वभौमिक बनाती है। आज के वैश्विक परिवर्तनों में शिवानी का साहित्य मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता दर्शाता है। नारी सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संघर्ष के दौर में यह अध्ययन शोध कार्यों को दिशा देगा।[6]

साहित्यिक परिचय

हिंदी कथा साहित्य में जिन रचनाकारो ने सामान्य जनजीवन, विशेषतः स्त्री जीवन की आंतरिक पीड़ा, संघर्ष, आकांक्षाओं और संवेदनाओं को अत्यंत सहज, कोमल और मानवीय रूप में प्रस्तुत किया है, उनमें शिवानी का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है।[8] शिवानी का कथा साहित्य भावनात्मक गहराई, संवेदनशील दृष्टि और मानवीय करुणा से परिपूर्ण है। शिवानी ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से उस समाज को अभिव्यक्त किया है जहाँ संबंधों की जटिलता, प्रेम की तड़प, पारिवारिक बंधन, स्त्री की पीड़ा, आत्मसम्मान और सामाजिक मर्यादाएँ निरंतर टकराती रहती हैं। उनका साहित्य केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि पाठक को भीतर तक स्पर्श करता है। यही कारण है कि शिवानी को मानवीय संवेदनाओं की कथाकार कहा जाता है। कथाकार शिवानी हिंदी साहित्य की लोकप्रिय एवं संवेदनशील लेखिका हैं, जिनका जन्म 17 अक्टूबर 1923 को उत्तराखंड के कुमाऊँ की प्रसिद्ध लेखिका शिरोमणि हृदया की पुत्री के रूप में हुआ। उनका वास्तविक नाम गौरा पंत था, किंतु लेखन क्षेत्र में वे 'शिवानी' के नाम से विख्यात हुईं।[2] शिवानी का साहित्य नारी केंद्रित होने के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं का अनुपम कोष है, जो हिंदी कथा साहित्य को लोकप्रिय बनाने में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। संस्कृत, हिंदी, बंगाली, गुजराती, उर्दू एवं अंग्रेजी भाषाओं का समन्वय उनकी लेखन-शैली में शैली में झलकता है। उनके पिता हरगोपाल पंत एवं माता हृदया की साहित्यिक पृष्ठभूमि ने उन्हें प्रेरित किया। 1951 में 'धर्मयुग में मैं मुर्गा हूँ' हूँ' एवं 'जमीदार की मृत्यु' जैसी कहानियों से उन्होंने पाठक वर्ग को आकर्षित किया। लखनऊ में बसकर उन्होंने 'स्वतंत्र भारत' पत्रिका के लिए 'वातायन' स्तंभ लिखा, जो साहित्य प्रेमियों में चर्चित रहा। चालीस से अधिक उपन्यास, सैकड़ों कहानियाँ, संस्मरण, बाल-साहित्य एवं व्यक्तिचित्र रचकर उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी अंतिम रचनाएँ 'सुनहुँ तात यह अकथ कहानी' एवं 'सोने दे' आत्मवृत्तात्मक हैं। शिवानी की प्रमुख रचनाओं में 'कृष्णकली', 'मायापुरी', 'भैरवी', 'चौदह फेरे', 'विषकन्या, 'लाल हवेली', 'श्मशान चंपा', 'रति विलाप', 'अपराधिन', 'आमादेर शांतिनिकेतन' एवं 'स्मृति कलश' शामिल हैं।[3] कुमाऊँनी लोक-संस्कृति, मध्यमवर्गीय जीवन एवं नारी की मनोदशा उनके चरित्र चित्रण की विशेषता है। 'कृष्णकली' वेश्या जीवन की करुणा को मानवतावादी दृष्टि से चित्रित करती है, समाज के अन्याय पर प्रहार करते हुए। 'कालिन्दी' विधवा स्वावलंबन एवं समर्पण की गाथा है, जो प्राचीन परंपराओं को चुनौती देती हैं। 'पूतोंवाली' मातृत्व की पवित्रता को ज्वरग्रस्त संतान के माध्यम से मार्मिक बनाती है। 'तपण' में पुष्पावती का प्रतिशोध नारी शक्ति का प्रतीक है। 'लाल हवेली' विभाजन की त्रासदी में ताहिरा का पहचान संकट, हिंदू से मुस्लिम बनकर लौटना, आत्म-दोषारोपण एवं प्रेम द्वंद्व को उजागर करती है। इन रचनाओं में संवेदना के आयाम त्याग, करुणा, प्रतिशोध बहुआयामी हैं।[4]

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

साहित्यिक योगदान

शिवानी को कहानी को हिंदी साहित्य की केंद्रीय विधा बनाने का श्रेय जाता है। उनका साहित्य नारी प्रधान होते हुए भी मानवतावादी है, जाति धर्म से परे करुणा, त्याग एवं मातृत्व की संवेदनाएँ प्रमुख हैं। शिवानी ने लोकप्रियता के साथ साहित्यिक गुणवत्ता का समन्वय स्थापित किया, जिससे हिंदी कहानी मंचीय विधा बनी। शिवानी का कथा साहित्य मानवीय संवेदनाओं, प्रेम, करुणा, प्रतिशोध एवं समर्पण का दर्पण है। नारी को पीड़ित मात्र न बनाकर सशक्त रूप में चित्रित कर उन्होंने स्त्री चेतना को मजबूत किया। सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते हुए भी उनका लेखन आशावादी है। हिंदी कथा साहित्य में गौरा पंत शिवानी का विशिष्ट स्थान है। उनके उपन्यास और कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं की सूक्ष्म, सहज और मार्मिक अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने विशेष रूप से नारीःमन, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक यथार्थ को संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत किया है।[5]

मानवीय संवेदना के आयाम

कथाकार शिवानी हिंदी साहित्य की एक ऐसी लेखिका हैं जिनके कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाएँ गहनता से उभरती हैं। शिवानी के कथा साहित्य में मानवीय संवेदना के प्रमुख आयाम नारी संवेदना और नारी जीवन का यथार्थ, प्रेम और करुणा की भावना, पारिवारिक संबंधों की संवेदनशीलता, सामाजिक यथार्थ और मानवीय पीड़ा, अंचल और प्रकृति के प्रति संवेदना है। उनके उपन्यासों और कहानियों में नारी के त्याग, मातृत्व, प्रेम, करुणा और सामाजिक संघर्ष जैसे आयामों का मार्मिक चित्रण किया गया है, जो पाठक के हृदय को स्पर्श करता है। यह अध्ययन शिवानी के साहित्य में मानवीय संवेदना के विविध रूपों को उद्घाटित करता है। शिवानी के कथा साहित्य में नारी को केंद्र स्थापित कर उसके कोमल हृदय और अप्रतिम सौंदर्य का भावपूर्ण वर्णन मिलता है। 'कृष्णकली में वेश्या जीवन को सहानुभूति से चित्रित किया गया है, जो समाज की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करता है। विधवा विवाह और स्वावलंबन जैसे मुद्दों पर प्राचीन परंपराओं को चुनौती देते हुए नारी की आंतरिक शक्ति को दर्शाया गया है। यह संवेदना नारी के समर्पण और पीड़ा को मानवीय ऊँचाई प्रदान करती है। शिवानी भाषावाद, जातिवाद या संप्रदायवाद से मुक्त मानवतावादी दृष्टि अपनाती हैं। उनके पात्र मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं को संवेदनशीलता से जीते हैं, जहाँ मंदिर-मस्जिद सभी स्थानों पर समान भावना का आह्वान होता है।[9] उपन्यासों में मातृत्व की करुणा, पितृतुल्य स्नेह और पारिवारिक बंधनों का चित्रण पाठक को भावविभोर कर देता है। 'अतीत की चिंगारियाँ जैसे कार्यों में वैधव्य की करुण गाथा और त्याग की भावना प्रमुख है, जो मानवीय संबंधों की गहराई को प्रतिबिंबित करती है । शिवानी के साहित्य में संवेदना के आयाम प्रेम की कोमलता से लेकर सामाजिक अन्याय के क्रोध तक बहुआयामी हैं। उनके कथा में मातृत्व का चित्रण सर्वोपरि है, जहाँ माँ का त्याग सर्वत्र विख्यात है। साथ ही, वे यथार्थ को संवेदित स्वरों में प्रस्तुत कर समाज से संवाद करती हैं। उनके शिल्प में संवेदना और भाषा का समन्वय अद्भुत है। शिवानी सामाजिक मुद्दों को मानवीय भावों से जोड़ती हैं। स्त्री-पुरुष संबंध, दहेज प्रथा और पारिवारिक विघटन जैसे विषय उनके कथा साहित्य में संवेदना के साथ उभरते है। यह दृष्टि उन्हें आधुनिक बनाती है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलन है। उनके साहित्य का मूल्यांकन संवेदना के इन आयामों से होता है।[19]

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

शिवानी के कथा साहित्य की रचनाओं का विश्लेषण

कथाकार शिवानी हिंदी साहित्य की संवेदनशील लेखिका हैं, जिनके कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाएँ नारी केंद्रित भावनाओं के माध्यम से गहराई से उभरती हैं। उनके उपन्यासों और कहानियों का विश्लेषण दर्शाता है कि त्याग, मातृत्व, सौंदर्य, वैधव्य, प्रतिशोध और करुणा जैसे आयाम जीवन के यथार्थ को मार्मिकता से चित्रित करते हैं। यह अध्ययन उनकी प्रमुख रचनाओं के माध्यम से संवेदना के बहुआयामी स्वरूप को विस्तार से उजागर करता है, जो पाठक को भाव-विभोर कर देता है।

'मायापुरी' उपन्यास में शिवानी सामाजिक बंधनों और पुरुषवादी दृष्टि के कारण नारी की आंतरिक पीड़ा को उभारता है। नारी की बाह्य आकर्षण और आंतरिक संवेदना के द्वंद्व को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करता है। शिवानी सौंदर्य को नारी जीवन की जटिलता के प्रतीक के रूप में उपयोग करती है, जो पाठक की संवेदना को स्पर्श करता है। यह रचना नारी सौंदर्य के मानवीय प्रभावों का गहन अध्ययन प्रस्तुत करती है, जहाँ सौंदर्य की चमक पीड़ा की छाया में विलीन हो जाती है। कृष्णकली' में वेश्या के जीवन को शिवानी सहानुभूतिपूर्वक चित्रित करती है, जो समाज की कठोर वास्तविकताओं पर प्रहार है। पात्र की संवेदनाएँ जाति धर्म की सीमाओं से परे उठकर सार्वभौमिक करुणा को प्रतिबिंबित करती हैं। रचना का शिल्प संवेदना को इतनी गहनता प्रदान करता है कि पाठक पात्र की पीड़ा को स्वयं अनुभव करता है। शिवानी वेश्या को भी पूजनीय बनाकर नारी की सार्वभौमिकता को स्थापित करती हैं।[10] 'कालिन्दी' उपन्यास विधवा विवाह और स्वावलंबन के मुद्दों को उठाता है, कालिन्दी का त्यागपूर्ण चरित्र प्राचीन परंपराओं को चुनौती देता है। मामा की संतानहीनता के कारण कालिन्दी का समर्पण नारी की आंतरिक शक्ति को उजागर करता है। शिवानी नारी को स्वावलंबी बनाकर सशक्तिकरण का मार्ग दिखाती हैं, जहाँ वैधव्य पीड़ा के बजाय संघर्ष का प्रतीक बन जाता है। यह संवेदना नारी को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयास है। 'पूतोंवाली' में मातृत्व का अटूट बंधन केंद्र में है, जहाँ ज्वरग्रस्त संतान के लिए माँ का करुण चेहरा हृदयस्पर्शी है। शिवानी माँ के त्याग को देवतुल्य बनाती है, जो पारिवारिक बंधनों की गहराई को दर्शाता है। रचनाओं मे मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं को संवेदनशीलता से उकेरता है। नानी का रोता चेहरा और माँ का हाथ फेरना मानवीय संवेदना के सर्वोच्च स्वरूप को चित्रित करता है। यह उपन्यास मातृत्व को भारतीय संस्कृति का मूल आधार बनाता है। 'तपण' लघु उपन्यास में पुष्पावती मात्र तेरह वर्ष की आयु में बलात्कार की शिकार होती है, फिर अत्याचारों का प्रतिशोध लेती है। शिवानी नारी की प्रतिशोधपूर्ण संवेदना को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती है, यह संवेदना सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार है। पात्र का संघर्ष नारी को कमजोर न मानकर विद्रोही बनाता है।[13]

'रथ्या में वसुंधरा का त्याग और 'मोहब्बत' में रोबटा का अवैध संतान पालन समर्पण की मिसाले है। शिवानी नारी को पूजनीय बनाती है, सामाजिक कुरीतियों पर चोट करती हैं। कहानी 'लाल हवेली' में शिवानी ने मानवीय संवेदनशीलता के अनेक तत्वों को गहराई से उकेरा है, जो मुख्य रूप से विभाजन की विभीषिका से उपजी नारी की आंतरिक पीड़ा पर केंद्रित है। यह कहानी सुधा ताहिरा के द्वंद्व को दर्शाती है, जो भारत-पाक विभाजन के दौरान हिंदू से मुस्लिम बनकर पाकिस्तान चली गई थी और अब अपने पाकिस्तानी पति रहमान अली व बेटी सलमा के साथ भारत लौटती है। कहानी का केंद्रीय तत्व ताहिरा की मानसिक वेदना है। ट्रेन यात्रा के दौरान अतीत की स्मृतियाँ तरुण पति के गालों पर गुलाल मलना, होली दीवाली की खुशियाँ

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

उसके हृदय को छलनी कर देती है। वह स्वयं को धियकारती है "सुधा, तू मर क्यों नहीं गई?" यह आत्म दोषारोपण संवेदनशीलता का चरम बिंदु है, जहाँ धर्म परिवर्तन के बावजूद संस्कार बेड़ी की तरह बंधे रहते हैं। शिवानी ने इस द्वंद्व को इतनी मार्मिकता से चित्रित किया है कि पाठक ताहिरा की पीड़ा को प्रत्यक्ष अनुभव करता है। रहमान अली का चरित्र संवेदनशील प्रेम का प्रतीक है। वह ताहिरा को कांच की गुड़िया' मानकर संभालता है. शरबत लाता है, नब्ज़ पकड़ता है। परंतु ताहिरा उसके प्रेम को बोझ समझती है, क्योंकि यह उसके अतीत को कुचलता है। बेटी सलमा व मामी के दृश्य माथे पर हाथ फेरना, 'मेरी इस्मत कहना मातृत्व व पारिवारिक स्नेह की संवेदना जगाते है। ये क्षण विभाजन की क्रूरता के बीच मानवीय गर्माहट प्रदान करते हैं। विभाजन के संदर्भ में कहानी दंगों की त्रासदी को उभारती है। ताहिरा का पूर्व पति अभी अविवाहित है, जो उसके अपराध बोध को बढ़ाता है। रहमान का पाकिस्तान में पीड़ित होना साम्प्रदायिक हिंसा की सार्वभौमिक पीड़ा को दर्शाता है। शिवानी ने बिना आरोप लगाए मानवीय करुणा पर जोर दिया है. प्रेम की धारा मोड़ दी है। यह संवेदनशीलता राजनीतिक विभाजन से परे हृदय की एकता दिखाती है।[12]

शिवानी का उपन्यास 'चौदह फेरे' हिंदी साहित्य में कुमाऊनी संस्कृति और नारी मन की गहन खोज का प्रतीक है। यह रचना गौरापंत शिवानी के कथा साहित्य की विशेषता सहज भाषा, जीवंत पात्र और सामाजिक मूल्यों के द्वंद्व को उजागर करती है। कहानी की नायिका अहल्या कलकत्ता के एक धनी कुमाऊनी व्यापारी की बेटी है, जो पिता की उपेक्षा में पली अपनी अनपढ़ मां के आश्रम जाकर अपनी जड़ों से जुड़ने की खोज करती है। विवाह पूर्व प्रेम, पारिवारिक तनाव और सांस्कृतिक टकराव के चौदह फेरें जीवन के प्रतीक है, जो पाठक को कुमाऊनी जीवनशैली, भोजन, वेशभूषा, रीति-रिवाजों से रूबरू कराते है।[11] शिवानी के नारी पात्र स्वाभिमानी और संवेदनशील है। अहल्या का अंतर्मन प्यार की उलझनों से जूझता है. फिर भी आत्मसम्मान बनाए रखता है। मां का त्याग और बेटी की छटपटाहट नारी की आंतरिक यात्रा को दर्शाती है, जो रूढ़ियों को चुनौती देती है। उपन्यास बदलते मूल्यो, स्त्री स्थिति और पहाड़ी समाज के चित्रण से चेतना जगाता है। शिवानी की रचनाएं संघर्षपूर्ण जीवन को स्वाभाविकता से उकेरती है, जहाँ पात्र अपनी शर्तों पर जीते है। शिवानी का उपन्यास 'भैरवी' उनके कथा साहित्य में रहस्यवाद, तंत्र-मंत्र और नारी मन की आध्यात्मिक उलझनों का अनूठा संगम है। यह रचना सामाजिक यथार्थ से परे सिद्ध साधकों व भैरवी शक्तियों की रहस्यमयी दुनिया में ले जाती है, जहाँ नायिका चंदन की आंतरिक यात्रा पाठक को बाँध लेती है। भोली-भाली चंदन भैरवी आश्रम में पहुँचकर सांसारिक प्रेम व वैराग्य के द्वंद्व में फँस जाती है। विकराल भैरव रूपधारिणी शक्तियों के बीच वह मुक्त बन्दिनी बनती है, जो सांसारिक बंधनों से लौटने की इच्छा रखते हुए भी आंतरिक बेड़ियों से जूझती रहती है। तांत्रिक वातावरण, जादुई घटनाएँ और मनोवैज्ञानिक संघर्ष कथानक को रोमांचकारी बनाते हैं।[14]

शिवानी की नायिका चंदन निष्पापता व कामनाओं के मध्य संतुलन खोजती है। राजेश्वरी जैसे पात्र पारंपरिक समाज की पीड़ा भोगकर विद्रोह करते है, स्त्री विमर्श को नया आयाम देते हैं। नारी को माया, मातृत्व व शक्ति के रूपों में चित्रित किया गया है, जो आत्मसंघर्ष से ऊपर उठने की कोशिश करती है। उपन्यास नारी की आध्यात्मिक खोज, रूढ़ियों पर प्रहार व मानवीय संवेदनाओं को उजागर करता है। यह शिवानी के साहित्य की विशेषता संघर्षपूर्ण जीवन का जीवंत चित्रण दर्शाता है। शिवानी का कथा साहित्य अपराधिनी सामाजिक अपराधों के पीछे मानवीय संवेदनाओं और न्याय की जटिलताओं का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। यह

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

कहानी संग्रह या उपन्यास नारी मनोविज्ञान, अपराधी प्रवृत्ति और समाज के दोहरे मापदंडों को उजागर करता है, जहाँ अपराधिनी को मात्र पापी न मानकर उसके पीछे छिपे दर्द को खोजा गया है। कहानी में एक अबोध बालिका को ताऊ के बहकावे में सहेली को बुलाने के कारण हत्या के अपराध में फंसाया जाता है। कानूनी दृष्टि में वह अपराधिनी बन जाती है, भले ही वह निष्पाप हो। अन्य पात्रों में कीर्तनिया माँजी की कुटिलता, हत्यारे भाइयों की क्रूरता और डकैत की विकृत मानसिकता को राखी बाँधने जैसे प्रतीकात्मक दृश्यों से उभारा गया है। ये घटनाएँ कारागार के वातावरण में घटित होती है, जो यथार्थ और आश्चर्य के बीच संतुलन बनाती है। शिवानी की अपराधिनी नारी परंपरागत पतिव्रता से हटकर विधवा, वेश्या या पतित रूप में आती है। बालिका का शोषण, माँजी का पेशेवर अपराध चित्रण नारी को समाज की बलि का बकरा दर्शाता है। फिर भी, उनकी संवेदनशीलता राखी बाँधने में दया या त्याग आंतरिक संघर्ष उजागर करती है। रचना न्याय व्यवस्था, बाल अपराध और स्त्री शोषण पर प्रहार करती है। अपराध को केवल कर्म न मानकर उसके सामाजिक कारणों को रेखांकित करती है, शिवानी की संवेदनशील दृष्टि दर्शाती है।[15]

शिवानी का उपन्यास 'कस्तूरी कुंडल बसै' उनके कथा साहित्य में नारी की आंतरिक सुगंध, प्रेम की खोज और पारिवारिक बंधनों का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। यह रचना कबीर के दोहे से प्रेरित होकर स्त्री के हृदय में छिपी आध्यात्मिक भावुक कस्तूरी को उजागर करती है, जो बाहरी भटकावों के बावजूद आंतरिक सत्य की ओर ले जाती है। नायिका का जीवन ग्रामीण पृष्ठभूमि से शहरी संघर्षों तक फैला है, जहाँ विवाह, ससुराल की रूढ़ियाँ और प्रेम के द्वंद्व प्रमुख है। वह समाज की अपेक्षाओं से जूझती हुई अपनी आंतरिक शक्ति कस्तूरी जैसी सुगंध खोजती है। पारिवारिक कलह, विधवा जीवन और नारी की आत्मनिर्भरता की यात्रा कथानक को रोचक बनाती है, जो शिवानी की कुमाऊनी संस्कृति से ओतप्रोत है। शिवानी की नायिका स्वाभिमानी, संवेदनशील और विद्रोही है। वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था से टकराती है, फिर भी त्याग व समर्पण की भावना बनाए रखती है। कस्तूरी का प्रतीक नारी की निहित शक्ति दर्शाता है बाहर ढूँढ़ने पर भी भीतर ही बसने वाली। यह चित्रण स्त्री विमर्श का प्रारंभिक स्वरूप है, जहाँ पीड़ा के साथ साहस झलकता है। उपन्यास नारी की आंतरिक यात्रा, रूढ़िवाद पर प्रहार और आत्मजागृति पर बल देता है। शिवानी सामाजिक परिवर्तन की वकालत करती है, जहाँ स्त्री अपनी 'कस्तूरी' पहचानकर सशक्त होती है। शिवानी का उपन्यास शिशिर की धूप' उनके कथा साहित्य में नारी की कोमल संवेदनाओं, पारिवारिक विघटन और शीत ऋतु की धूप-सी सौम्यता का प्रतीकात्मक चित्रण प्रस्तुत करता है। यह रचना कुमाऊनी संस्कृति के पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक आकांक्षाओं के द्वंद्व को उकेरती है, जहाँ नायिका का जीवन संघर्षपूर्ण प्रेम व त्याग की आभा से आलोकित होता है। कहानी वैदेही और रोहित जैसे पात्रों के इर्द-गिर्द घूमती है, जहाँ विधवा नारी मातृत्व की पीड़ा सहते हुए सौतेले पुत्र के प्रति समर्पण दिखाती है। कालिन्दी का जन्म व विवाह पूर्व तय रिश्ता, अनसूया की विधवा अवस्था में बुटिक खोलना, हीरा की विश्वासघातपूर्ण हत्या ये घटनाएँ पारिवारिक कलह, धोखे व सामाजिक दबावों को उजागर करती है। शिशिर की धूप प्रतीक जीवन की क्षणिक गर्माहट व शीतल पीड़ा का है। वैदेही कलंक सहते हुए संतान पालने को तत्पर रहती है, शोभा भाइयों के मृत्यु के बाद नौकरी कर जीवन चलाती है। ये पात्र रूढ़ियों से जूझते हुए भी स्वाभिमान बनाए रखती है, जो स्त्री चेतना का प्रारंभिक विमर्श दर्शाता है। शिवानी की चित्रात्मक शैली शिशिर के वातावरण को जीवंत बनाती है, संवादों से पात्रों का अंतर्मन खुलता है। काव्यात्मकता पाठक को मंत्रमुग्ध रखती है। उपन्यास विधवा विवाह, बाल विवाह

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

व स्त्री शोषण पर प्रहार करता है। पारिवारिक विघटन व नारी की आंतरिक शक्ति को रेखांकित कर सामाजिक चेतना जगाता है। शिवानी का साहित्य संघर्षपूर्ण जीवन को स्वाभाविकता से चित्रित करता है। शिवानी का उपन्यास 'मैं और मेरा घर' उनके कथा-साहित्य में नारी की आत्मकथा शैली में पारिवारिक विघटन, स्वाभिमान और घरेलू संघर्षों का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है। यह रचना कुमाऊनी संस्कृति के पारंपरिक मूल्यों और शहरी आधुनिकता के टकराव को उजागर करती है, कहानी जया जैसी सरल, स्वाभिमानी लड़की के इर्द-गिर्द घूमती है, जो सरकारी मास्टर के घर से मंत्री के पुत्र कार्तिक से विवाह के बाद ससुराल की रूढ़ियों का सामना करती है। माधव बाबू का निर्णय गरीब घर की बेटी लाना परिवार में शीतयुद्ध छेड़ता है, जहाँ जया को नीचा देखा जाता है। दहेज विवाद, पारिवारिक कलह और आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए, वह स्वाभिमान से जीवन तलाशती है। उपन्यास में रिश्तों की प्याज़ जैसी परतें खुलती है, दुख अकेलापन के बावजूद पात्र अपनी शर्तों पर जीते है। शिवानी की नायिका जया त्यागमयी, संवेदनशील और विद्रोही है। वह ससुराल के अपमान सहते हुए भी आत्मसम्मान नहीं त्यागती, मॉडर्न संगत से पत्नी होने पर भी संस्कारों को निभाती है। अन्य पात्रों में लीला जैसी विधवाएँ या राजेश्वरी जैसी साहसी स्त्रियाँ नारी की विविधता दिखाती हैं, जो पितृसत्ता से टकराती हैं। उपन्यास वर्ग भेद, दहेज प्रथा और स्त्री स्थिति पर प्रहार करता है। शिवानी का उपन्यास 'चल खुसरो घर आपने' उनके कथा साहित्य में नारी की त्यागमयी यात्रा, पारिवारिक जिम्मेदारियों और आंतरिक द्वंद्व का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। कबीर के दोहे से प्रेरित यह रचना निम्नमध्यवर्गीय परिवार की कुमुद को केंद्र में रखकर स्वार्थी भाई-बहनों के बोझ तले कुचलती नारी की पीड़ा उजागर करती है। कुमुद गरीब माता-पिता की सात पुत्रियों में सबसे बड़ी है, जो अनपढ़ भाई-बहनों की जिम्मेदारी निभाते हुए बंगाल में राजा की विक्षिप्त पत्नी की परिचर्या करने को विवश हो जाती है। मानसिक रोगी मालती के भयावह स्वरूप, कुटिल चरित्र और कुमुद का संघर्ष कथानक को नाटकीय बनाते हैं। आर्थिक तंगी व पारिवारिक उपेक्षा उसे घर से दूर धकेलती है, जहाँ वह अपनी पहचान गढ़ने की कोशिश करती है। शिवानी की नायिका कुमुद स्वतंत्र, तेजस्वी व समर्पित है डबल एम.ए. करने वाली हेडमिस्ट्रेस ललिता की भाँति। वह विवाह ठुकराती है, पर प्रारब्ध उसके स्वाभिमान को चुनौती देता है। विक्षिप्त मालती अग्निशिखा-सी उग्रता दर्शाती है, जो नारी मनोविज्ञान की गहराई दिखाती है। उपन्यास दहेज, विधवा पीड़ा व नारी आत्मनिर्भरता पर प्रहार करता है। पारिवारिक स्वार्थ के विरुद्ध संघर्ष से चेतना जगाता है।[16]

शिवानी का उपन्यास "अतिथि उनके कथा-साहित्य में वर्ग-भेद, पारिवारिक कलह और नारी स्वाभिमान का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है। सरल शिक्षक-पुत्री जया को मंत्री परिवार में 'अतिथि बनाकर लाया जाना कथानक की धुरी है, जो रूढ़ियों व अपमान के बीच संघर्ष को उजागर करता है। माधव बाबू अपनी सरलता के कारण श्यामचरण की बेटी जया से कार्तिक का विवाह कराते हैं, किंतु ससुरालीनें इस गरीब घर की लड़की को नीचा देखती हैं। दहेज विवाद, नशेड़ी पुत्री की विद्वेषपूर्णता और जया का आईएएस परीक्षा की तैयारी करते हुए शेखर से प्रेम ये मोड़ प्याज़ सी परतें खोलते हैं। जया स्वाभिमान से जीवन तलाशती है. पश्चातापी माधव बाबू परिवार को एकजुट करने को व्याकुल रहते हैं। जया शिवानी की आदर्श नायिका है सरल, बुद्धिमान, त्यागमयी। अपमान सहते हुए भी वह विद्रोही बनी रहती है, आईएएस बनकर आत्मनिर्भरता प्राप्त करती है। अन्य स्त्रियाँ ससुरालीनें कुटिल, जया संवेदनशील नारी की विविधता दर्शाती हैं, जो पितृसत्ता से टकराती हैं। उपन्यास दहेज, वर्गदंभ व स्त्री शोषण पर प्रहार करता है। रूढ़ियों को तोड़कर संस्कार

ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

अपनाने, स्वाभिमान बनाए रखने का संदेश देता है। शिवानी का साहित्य संघर्षपूर्ण जीवन को स्वाभाविकता से चित्रित करता है। शिवानी का उपन्यास 'सुरंगमा' उनके कथा साहित्य में नारी के आंतरिक बाहरी संघर्ष, विवाह भय और आत्मनिर्भरता का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। बाल विधवा की बेटी के रूप में जन्मी सुरंगमा का जीवन दैवीय विडंबनाओं से भरा है, जो स्वाभिमान व नियति के द्वंद्व को उजागर करता है। बैंक लिपिक सुरंगमा मंत्री के घर ट्यूशन के लिए पहुँचती है, जहाँ आर्थिक तंगी उसे विवाह से विमुख रखती है। माता-पिता के कलहपूर्ण रिश्ते से प्रभावित वह दोगुनी उम्र के संगीत शिक्षक से भागकर विवाह करती है, किंतु असफलता पर ईसाई दंपति की शरण लेती है। एकांत की तलाश में घर छोड़कर भी अतीत पीछा करता रहता है। सुरंगमा शिवानी की सशक्त नायिका है सौम्य, संवेदनशील, विद्रोही। वह पुरुष-प्रधान समाज में आत्मसम्मान बनाए रखती है, विवाह की डोर ठुकराती हुई भी परिस्थितियों से विवश होती है। अन्य स्त्रियाँ त्याग व साहस की प्रतीक हैं। उपन्यास विधवा पुत्री के कलंक, विवाह दबाव व स्त्री स्वतंत्रता पर प्रहार करता है। हार मानने के बजाय संघर्ष जारी रखने का संदेश देता है। शिवानी का उपन्यास "श्मशान चम्पा" उनके कथा-साहित्य में नारी के एकाकी जीवन, त्याग की मार्मिकता और नियति के क्रूर चक्र का प्रतीकात्मक चित्रण प्रस्तुत करता है। शीर्षक से ही श्मशान की नीरवता और चम्पा की कोमलता का विपरीत भाव उभरता है, जो पहाड़ी इलाकों में पलती डॉक्टर चम्पा की अभिशप्त वेदना को दर्शाता है। आत्मविश्वासी डॉक्टर चम्पा पिता की मृत्यु के बाद माँ व छोटी बहन की जिम्मेदारी निभाती है। अस्पताल का भार संभालते हुए वह विवाह व सांसारिक सुखों को दरकिनार कर देती है। छोटी बहन का हिप्पी बनना व माँ के प्रति विद्रोह चम्पा को तोड़ देता है। वह एकांत की तलाश में रूखे शहर चली जाती है, किंतु अतीत पीछा करता रहता है प्रेम का चेहरा किताबों व संगीत में बसता रहता है। नियति सुख के शिखर से घाटियों में धकेलती है। चम्पा शिवानी की परंपराप्रेमी, आज्ञाकारी नायिका है सेवामयी, संयमी। वह सबको इलाज देती है, पर अपना सन्नाटा भंग नहीं कर पाती। छोटी बहन का विद्रोह नारी की पीढ़ीगत उलझनों को दिखाता है, जहाँ बड़ी त्याग की बलि चढ़ती है। उपन्यास मातृत्व, बहन बंधन व स्त्री एकाकीपन पर प्रहार करता है। कर्तव्य के बोझ तले कुचलती नारी को सशक्तिकरण का संदेश देता है।[17]

शिवानी का लघु उपन्यास 'विषकन्या' उनके कथा साहित्य में वैवाहिक जीवन के टकराव, नारी कुंठा और प्रतिशोध की भावना का गहन चित्रण प्रस्तुत करता है। यह रचना दांपत्य के बिखराव को केंद्र में रखकर नारी मनोविज्ञान की मार्मिक पड़ताल करती है, जहाँ प्रेम विश्वास सहचर्य का स्थान विषादग्रस्ती ले लेता है। नायिका का विवाह प्रारम्भिक उत्साह के बाद वैमनस्य में बदल जाता है। पति-पत्नी के मध्य तीसरे व्यक्ति का हस्तक्षेप या हीनभावना संबंधों को तोड़ देती है। नारी की एकनिष्ठा के विरुद्ध पति की उपेक्षा उसे कुंठाग्रस्त बना देती है, जो हत्या तक पहुँच जाती है। कैजा उपन्यास से प्रेरित यह कथा मालदार जैसे पात्रों के माध्यम से तनावपूर्ण वैवाहिक जीवन को उजागर करती है। शिवानी की विषकन्या कुंठित, प्रतिशोधी व संवेदनहीन नहीं अपितु पीड़ित है। वह पति को हीन समझकर संवाद से बचती है, किंतु आंतरिक द्वंद्व उसे विद्रोही बनाता है। विधवा, निःसंतान या शोषित नारियों का चित्रण मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत है। उपन्यास वैवाहिक असफलता के कारणों हीनता, उपेक्षा, तीसरे व्यक्ति पर प्रहार करता है। नारी को कुंठा से मुक्ति व स्वावलंबन का संदेश देता है। शिवानी का लघु उपन्यास 'रति विलाप' उनके कथा साहित्य में नारी के उन्मादपूर्ण प्रेम, अवैध संतान की त्रासदी और पारिवारिक कलह का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। कुमाऊनी लोक संस्कृति से ओतप्रोत

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

यह रचना पगली किशनुली की विचित्र कहानी बुना है, जहाँ ममत्वपूर्ण कारवी का स्पर्श उन्माद को सौम्य बनाता है, किंतु अभाग्य अवैध पुत्र 'करण' को जन्म दे बैठता है। अल्मोड़ा पहुँची उद्भ्रांत किशनुली का उन्माद झील सा शांत कभी अग्निज्वाला-सा उग्र रहता है। सरल कारवी उसे सहलाती है, किंतु करण का जन्म सामाजिक कलंक लाता है। प्रतिभाशाली लड़की पिता की बीमारी पर अहमदाबाद चली जाती है और लौटती नहीं। कुटिल मामा द्वारा धोखे से विवाह कराई गई अनसूया को सुंदर तरुण पति विवाह रात्रि ही उन्मत्त व्यवहार से पुरुष भय ग्रस्त कर देता है। निःसंतान अनसूया हरसुख के अन्याय का शिकार बनती है। शिवानी की नारियाँ शापग्रस्त गंधर्व कन्या-सी प्रतिभाशाली किंतु अभागी हैं। किशनुली का उन्माद, कारवी का ममत्व व अनसूया का पीड़ित स्वरूप नारी मनोविज्ञान की गहराई उजागर करते हैं। विधवा, निषिद्ध प्रेमिका या धोखा खाई स्त्री भी संवेदनशील बनी रहती है। उपन्यास कुटिल विवाह प्रथाओं, अवैध संतान कलंक व स्त्री शोषण पर प्रहार करता है। मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत नारी को सशक्तिकरण का संदेश देता है। शिवानी का उपन्यास 'स्वयंसिद्धा' उनके कथा साहित्य में नारी के असाधारण संघर्ष, विधवा जीवन की त्रासदी और स्वाभिमान से आत्मसिद्धि की प्रेरक यात्रा का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करता है। यह रचना विधवा नायिका की बहुआयामी लड़ाई को केंद्र में रखकर स्त्री विमर्श को नई ऊँचाई देती है, जहाँ हर मोर्चे पर विजय पाने की जद्दोजहद अंततः शून्यता में परिणत होती है।[18]

निष्कर्ष

शिवानी का कथा साहित्य मानवीय संवेदना का सशक्तीकरण और जीवंत दस्तावेज है। उनकी रचनाओं का केंद्र मानव मन, नारीमन की कोमल भावनाएं, पीड़ा, प्रेम, करुणा और संघर्ष है। उन्होंने जीवन के साधारण प्रसंगों में निहित असाधारण भावनाओं को अत्यंत सहजता और आत्मीयता के साथ अभिव्यक्त किया है। शिवानी के पात्र सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक बंधनों और परिस्थितियों के दबाव में जीते हुए भी अपनी संवेदनशीलता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हैं। उनके साहित्य प्रेम, त्याग, सहानुभूति और आत्मबल का प्रतीक है। कथाकार शिवानी के कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का अध्ययन निष्कर्षतः दर्शाता है कि उनका साहित्य नारी केंद्रित भावनाओं का अनुपम कोष है। शिवानी ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से त्याग, मातृत्व, सौंदर्य, वैधव्य, प्रतिशोध और करुणा जैसे आयामों को इतनी मार्मिकता से चित्रित किया है कि यह हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उनकी रचनाओं के विश्लेषण से स्पष्ट पता चलता है कि संवेदना उनके शिल्प का मूल आधार है, जो यथार्थ को भावपूर्ण बनाती है। शिवानी सामाजिक कुरीतियों जैसे विधवा विवाह, दहेज, बलात्कार और पारिवारिक विघटन को मानवीय भावों से जोड़ती हैं। उनका साहित्य मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं को संवेदनशीलता से उकेरता है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलन है। आज के संदर्भ में शिवानी का साहित्य नारी सशक्तिकरण और मानवीय मूल्यों का दर्पण है। सामाजिक परिवर्तन के दौर में उनकी संवेदनाएँ प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं। यह अध्ययन पुष्टि करता है कि शिवानी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 47-56

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शिवानी का कथा साहित्य एक अध्ययन, अत्तर, एच एम, 2016
2. शिवानी का कथा साहित्य मे नारी जीवन, राव, आशा विजय, 2017
3. Shivani Aur Usha Priyamvada K Upanyason Me Stri Jeevan Ka Tulnatmak Adhyayan, Sonee Kumari*, 2024*
4. शिवानी के साहित्य के समीक्षात्मक अध्ययन, सरिता, 2019
5. Shivani ke upanyaso ka samaajshaastriya adhyayan, Savita*, 2025*
6. शिवानी के उपन्यास में नारी एक अध्ययन, पटेल, वैशाली धीरूभाई, 2015
7. Shivani ke aupanyasik patron ka manovajyanik addhyayana, Kamlesh, Kamlesh, 2016
8. Shivani ke upanyaso me nari jivan ka chitran, Sharma,Meenu, 2015
9. Shivani ke upanyaso me nari chritra ke vivedh roop, Pitti,Gulab, 2016
10. Shivani ke upanyaso ke patra, Purwar,Sushma, 2016
11. Shivani kai katha sahitya ka bhasha shashtriya adhyayan, Arti Upadhyay, 2020
12. Shivani ke upanyason mein samaj sandarbho ka adhyayan, Nema, Sandhya, 2025
13. शिवानी के उपन्यासों क जीवन मूल्य, श्रीवास अर्चना, 2013
14. Shivani Ke Upanyasom Ka Adhyayan Stree Jagaran Ke Visesh Sandharbh Mein, Sunisha S Pillai, 2024
15. Shivani ke upanyason mein naari, Joon, Krishana, 2016
16. गौरा पंत शिवानी के उपन्यासों का वस्तुगत अनुशीलन, सिंह नीतु, 2015
17. Shivani ka Hindi sahitya samajik paripreksha mein, Sharma, Jyotsana, 2017
18. Shivani ke upanyason mein samaj sandarbho ka adhyayan, Nema, Sandhya, 2025
19. Shivani ke kahani sahitya ka anusheelan, Kakde,Anita Bhimrao, 2016